

लुग्याः RV. 1, 140, 13. अग्या धृष्टो अभिग्या तम् (पित्र) 2, 37, 3. अयत्सामं गीयमानम् अभि राधसा जुगुत् 8, 70, 5. इष्टं वीतं अभिगूर्तं वर्षकृतं तं देवा-सः प्रति गृणात्यश्मं von beifälligem Zuruf begleitet 1, 162, 15. स्वयम-भिगूर्त TS. 3, 2, 9, 1. — Vgl. अभिगूर्त.

— अव mit Drohungen auf Jmd (loc. dat.) losfahren: न कदाचिद्विजे नस्माद्विद्वानवगुरेदपि । न ताउपेतृणेनापि M. 4, 169. ब्राह्मणायावगुर्येव (sic) द्विजातिर्वधकाम्यया 165. अवगूर्य लब्धशतं सकृन्मभिकृत्य च । जिघांसया ब्राह्मणस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥ 11, 206, 208. अवगूर्ण P. 8, 2, 77, Sch. — Vgl. अवगोराण.

— आ Beifall bezeigen, billigen; zusagen, einwilligen: देवो वाचं दु-न्धुम आ गुरस्व AV. 5, 20, 4. पुराकाशम् नृपचेन्द्रा गुरस्व च RV. 3, 52, 2. सर्वभ्यो वा एष देवताभ्यः सर्वभ्यः पृष्ठेभ्ये आत्मानमगुरते यः सत्रायामुरते TBa. 1, 4, 2, 7. आगूर्य ÇĀṆKH. ÇR. 13, 3, 3. KĀTJ. ÇR. 25, 11, 1, 2. die आगुर aussprechen AIT. Br. 2, 28. — Vgl. आगुर, आगुराण, आगूर्ण, आगूर्त.

— उद् drohend die Stimme u. s. w. erheben: नमं उद्गुरमाणाव (TS.: अ-पगुरमाणाव) चाभिधृते च VS. 16, 46. उद्गूर्णे प्रथमो दण्डः संस्पर्शे तु तद-र्थिकः JĀGŪ. 2, 215. उद्गूर्णे कृतपदे तु दशविंशतिकौ दमौ । परस्परं तु स-र्वेषां शस्त्रे मध्यमसाहसम् ॥ 216. उद्गूर्णलुगुतेन चौराङ्गायुगं ररन्त PĀṆKĀT. 183, 9. उद्गुरिषत हुमान् BHAT. 15, 34. उद्गुरे ततः शैलम् 14, 51. उद्ग-र्षाणा 8, 89. उद्गूर्ण aufgehoben AK. 3, 2, 39.

— प्र laut ausrufen: प्र मन्द्युर्मनां गूर्तं केता भरते मयौ मिथुना यत्रैः RV. 1, 173, 2.

गुरा (von गुरु) n. = उद्यम, welches hier eher das Aufheben, als An- strengung bedeutet, AK. 3, 3, 11.

गुरु Ūṇ. 1, 24, 1. adj. f. गुर्वो; compar. गुरीयं P. 6, 4, 157. Vop. 7, 56. TBa. 1, 2, 9, 3. acc. m. गरीयसम् MBu. 1, 2749. गुरुतर häufig: गरीयस्तर MBu. 7, 5324. superl. गुरिष्ठ P. 6, 4, 157. AK. 3, 2, 62. a) schwer (Gegens. लघु) TRIK. 3, 3, 344. H. an. 2, 411. MED. r. 23. परा कृ यत्स्वरे कृत् नोर्त्तयथा गुरु RV. 1, 39, 3. भारः 4, 5, 6. AV. 9, 3, 24. AIT. Br. 4, 13. अश्मा AV. 6, 42, 2. ÇAT. Br. 12, 2, 10. पुरागुरुरिव कृत् वज्रः PĀṆKĀV. Br. 8, 5. म-द्गुरुपत्नैरलिवन्दैः RAGH. 12, 102. MEGH. 90. वासोमि RĪT. 1, 7. गदा गुर्वो MBu. 3, 885. धूः R. 2, 2, 7. RAGH. 1, 34. 3. 35. त्वेयमुक्षते वीर रणधूनां ग-रीयसी überaus schwer R. 6, 82, 43. गुरुतर MBu. 3, 13293. (स्पर्शः) लघु-गुरुतरो (= गुरु) ऽपि च 12, 6856. schwer im Magen liegend, schwer ver- dauulich, = दुर्तर TRIK. H. an. MED. Suçr. 1, 20, 12. 149, 16, 17. 172, 5. 206, 8. 19. 207, 13 u. s. w. गुत्रदत्त 2, 408, 21. — b) gross, ausgedehnt (dem äussern Umfange nach), = मकुत् TRIK. H. 1430. H. an. MED. ०म्ग PĀṆ- KĀT. II, 199. सोत्साक्षसिंसेयमो कन्याच्छत्रं लघुगुरुम् III, 28. सन्नानाम् 31, 1. स्वल्पन्नलाशयाः, गुरुन्नलाशयाः 31, 8. ते स्वल्पा अपि गुत्रन्विक्रमते 79, 2. क्वाया Schatten und मैत्री Freundschaft BHAT. 2, 50. ०क्रतु JĀGŪ. 3, 328. गुरुषु दिवसेष्वेव गच्छन्तु lang MEGH. 81. शरीरे गुरुतराः प्रकाराः संज्ञाताः PĀṆKĀT. 214, 15. (पृष्ठे) धरणिधरणक्रिणचक्रगुरिष्ठे (Sch.: = दृढ, कठिन, aber genauer: angeschwollen) Gīt. 1, 6. — c) in der Pros. von Natur oder positione lang RV. PRĪT. 1, 4. 18, 19. P. 1, 4, 11, 12. ÇRUT. 7 u. s. w. compar. ein langer Vocal in geschlossener Silbe RV. PRĪT. 18, 20. — d) gross (dem Grade nach), heftig: मत्तौ गुरुः पुनरस्तु सो अस्मै sein harter Spruch (Fluch) falle auf ihn zurück RV. 1, 147, 4. गुरु द्वेषो अरुषे दधति 7, 56, 19. त्यजेः 8, 47, 7. दुःख BHAG. 6, 22. अपराध PĀṆKĀT.

I, 342. हृदयकम्प VIKR. 6. परिताप ÇĀK. 66. कात्ताविरक्तगुरुणा — शापेन MEGH. 1. अद्विग्रहणगुरुभिर्गजितैः 48. प्रुच् 86. शोक KĀURAP. 28. खेद Gīt. 9, 7. प्रकर्ष RAGH. 3, 17. तात्राद्वलाद्वक्त्रं गरीयः MBu. 14, 255. गुरुतरं व्यसनम् M. 7, 52. 9, 295. एनम् 11, 256. पाप MBu. 12, 6083. यत्न 3, 16449. R. 6, 37, 38. शब्द VET. 26, 9. गरीयस्तरं भयम् Gefahr MBu. 7, 5324. — e) wichtig, gewichtig, eine grosse Bedeutung habend, viel geltend: धर्म BRĪHMAN. 2, 6. गुर्वर्थकाल ARG. 5, 7. कार्य R. 1, 24, 22. PĀṆKĀT. 109, 24. 265, 1. ÇĀK. 94. लोकपालानुभावाः RAGH. 2, 75. भाषित eine hochfahrende Rede PĀṆKĀT. I, 356. नृपणाधिकृताः पूगाः श्रेण्या ऽथ कुलानि च । पूर्व पूर्व गुरु (in der Bed. des compar.) त्वेयं व्यवहारविधौ नृणाम् ॥ JĀGŪ. 2, 30. भुक्तिस्तत्र गरीयसी 28. वीजाद्यो निर्गरीयसी M. 9, 52. 2, 136. धर्मलो-यो गरीयान्वै MBu. 1, 1886. (वचः) उभयं मे गरीयस्तु 8426. किं रातः स-र्वकृत्यानां गरीयः स्यात् 13, 2083. कार्यं गरीयः R. 5, 84, 3. काम एवार्थध-र्माभ्यां गरीयान् 2, 33, 9. गुरुतरं प्रयोजनम् PĀṆKĀT. 107, 10. गुणग्राम BHAT. 3, 23. स्वार्थतमतां गुरुतरां प्रणयिक्रिया VIKR. 94. — f) lieb: न चैतद्विद्वः कतरनो गरीयो यदा ज्ञेयं यदि वा नो ज्ञेयम् BHAG. 2, 6. गरीयः किमतो मम MBu. 13, 146. पुत्रं मम प्राणिर्गरीयसम् 1, 2749. DRAUP. 7, 14. धनाशा जीविताशा च गुर्वो प्राणभूतो सदा । वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्यो ऽपि गरीयसी ॥ Hīt. I, 103. R. 3, 33, 54. मर्कटः स्पर्धमानस्य विपदेव गरीयसी PĀṆKĀT. I, 418. RAGH. 14, 35. — g) ehrwürdig, in grossem Ansehen ste- hend: माता ताम्यो गरीयसी M. 2, 133, 146. 231. 11, 204. JĀGŪ. 1, 35. BHAG. 11, 37, 43. गुरुर्गरीयसो श्रेष्ठः der Lehrer steht unter den Ehrwürdigen oben an MBu. 1, 3044. गतो दशरथः स्वर्गं यो नो गुरुतरो गुरुः R. 2, 79, 2. तं मत्सं गुरेगुरुतरा MBu. 1, 3267. 3, 1837 (INDR. 3, 41: गुरुतरी). गरिष्ठ BHAG. P. 7, 13, 45. SĀB. D. 23, 15. — 2) m. a) eine ehrwürdige, angesehene Person, der man Ehrerbietung schuldig ist: Vater, Mutter, ältere Ver- wandte Gobh. 2, 3, 11. 4, 10. आचार्यापाणिवादेते गुरु-यश्च ÇĀṆKH. ÇRĪJ. 4, 12. BHAG. 2, 5. गुरुर्गिद्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणा गुरुः । पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वत्रा-यगतो गुरुः ॥ KĀN. 49. देवते हि भवान्गुरुः R. 1, 22, 20. मम भार्या तव गुरुः SUND. 4, 15. (दिलीपः) गुरुर्नृपाणाम् RAGH. 2, 68. नितिधरगुरोः — सुमेरोः ad ÇĀK. 78. sg. Vater R. 1, 31, 7—9. ÇĀK. 168. RAGH. 3, 31, 48. 4, 1. 12, 9. der ältere Bruder R. 6, 93, 48. du. die Eltern SĀV. 4, 22. pl. dass. M. 4, 153, 251, 252. VIKR. 148. KATHĀS. 4, 14, 15, 71. आत्मानं गुरुं कर्त्तु sich selbst vor Allen achten, sich selbst für die höchste Autorität ansehen MBu. 13, 21; vgl. 24. गुरु = पित्रादि AK. 3, 4, 25, 164. H. an. MED. — b) insbes. der Lehrer AK. 2, 7, 6. H. 77. H. an. MED. RV. PRĪT. 13, 1. fgg. ऀच. ÇRĪJ. 3, 9, 10. 4, 4, 6. PĀR. ÇRĪJ. 2, 4, 6, 11. निषे-कादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि । संभावयति चाग्नेन स त्वप्रो गुरु-रुच्यते ॥ M. 2, 142. अल्पं वा बहु वा यस्य श्रुतस्योपश्रोतेति यः । तमपोह गुरुं विद्याच्छत्रोपक्रियया तया ॥ 149. उपनीय गुरुः शिष्यं शिष्येक्षैचमा-दितः । आचारमग्निर्कार्यं च संध्योपासनमेव च ॥ 69. स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति JĀGŪ. 1, 34. षट्श्रुदाब्दिकं चर्यं गुरो ब्रैवेदिकं व्रतम् । तदर्थिकं पादिकं वा यच्छणात्तिकमेव वा ॥ M. 3, 1. गुरुराक्ष्वनीयः 2, 231. विद्यागुरु 206. — MBu. 1, 3044. R. 1, 2, 9. Suçr. 1, 7, 11. 13, 3. 118, 20. ÇĀK. 70, 3. PĀṆKĀT. 94, 20. RAGH. 1, 35, 57. — c) der Lehrer der Götter. Brhaspati, der Planet Jupiter AK. 1, 1, 2, 25. 3, 4, 25, 164. TRIK. 1, 1, 91. H. 119. H. an. MED. M. 11, 119, 121. VARĪH. BRU. S. 8, 33, 39. 9, 37, 11, 19, 17, 7 u. s. w. Verz. d. B. H. No. 896. गुरुचार 878. — d) der Lehrer